



nisha

20 Apr 2003

07:13 AM

Sojat Road

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121445301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 20/04/2003
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 07:13:00 घंटे
इष्ट _____: 02:42:25 घटी
स्थान _____: Sojat Road
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:48:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:34:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 06:38:16 घंटे
वेलान्तर _____: 00:00:58 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:29:14 घंटे
सूर्योदय _____: 06:08:02 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:59:57 घंटे
दिनमान _____: 12:51:55 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 05:40:52 मेष
लग्न के अंश _____: 24:32:04 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: वरियान
करण _____: बालव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: या-यामिनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1925	चैत्र	30
पंजाबी	संवत : 2060	वैशाख	7
बंगाली	सन् : 1410	वैशाख	6
तमिल	संवत : 2060	चिथिराई	7
केरल	कोल्लम : 1178	मेदम	7
नेपाली	संवत : 2060	वैशाख	7
चैत्रादि	संवत : 2060	वैशाख	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2060	चैत्र	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 11:17:56
जन्म तिथि _____ : 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:32:54 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : वरियान
योग समाप्ति काल _____ : 11:46:24 घंटे
जन्म योग _____ : वरियान
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 11:17:56 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 19:19:37
भभोग _____ : 55:09:23
भोग्य दशा काल _____ : बुध 10 वर्ष 11 मा 28 दि

घात चक्र

मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

Gayatri jyotish karyalaya

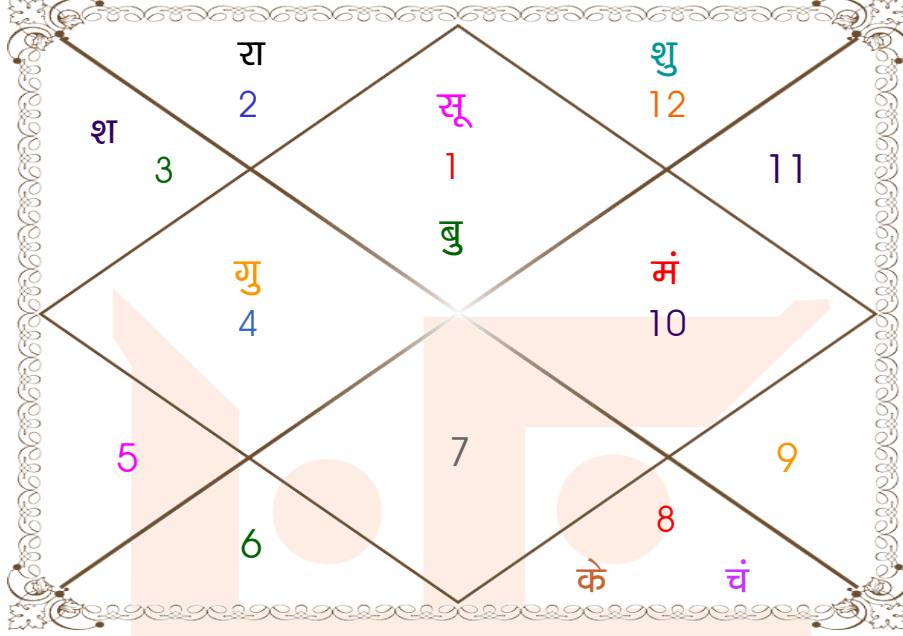
Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

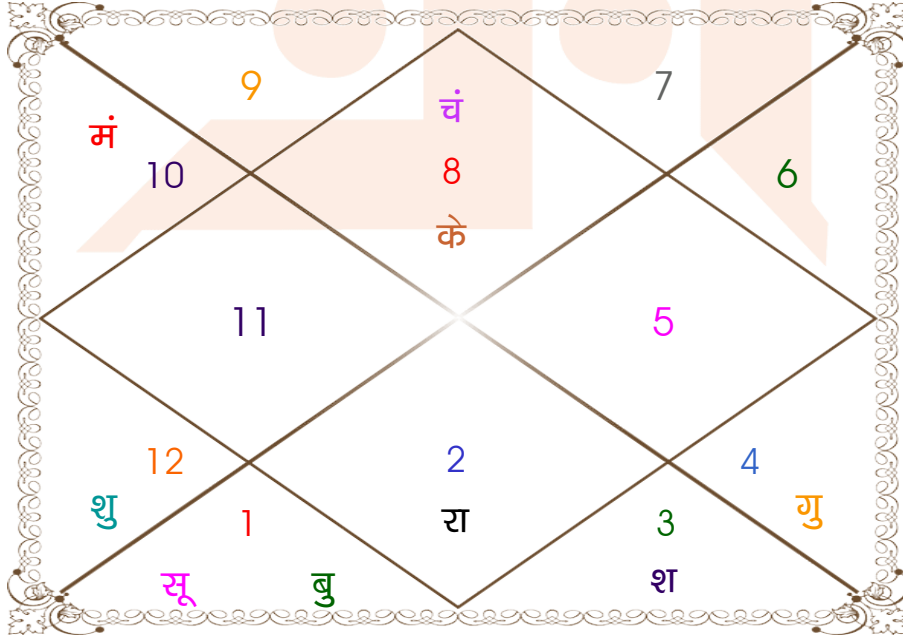
rakeshvyas1988@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु	बु ल सू	रा	श
			गु
मं			
	के चं		

लग्न कुंडली

रा	बु ल सू	शु
श		
गु		मं
		चं के

विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 11मा 28दि
बुध

20/04/2003

19/04/2117

बुध	18/04/2014
केतु	18/04/2021
शुक्र	18/04/2041
सूर्य	18/04/2047
चन्द्र	18/04/2057
मंगल	17/04/2064
राहु	18/04/2082
गुरु	18/04/2098
शनि	19/04/2117

योगिनी
भद्रिका 3वर्ष 2मा 24दि
संकटा

14/07/2019

14/07/2027

संकटा	24/04/2021
मंगला	14/07/2021
पिंगला	23/12/2021
धान्या	24/08/2022
भामरी	14/07/2023
भद्रिका	23/08/2024
उल्का	23/12/2025
सिद्धा	14/07/2027

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

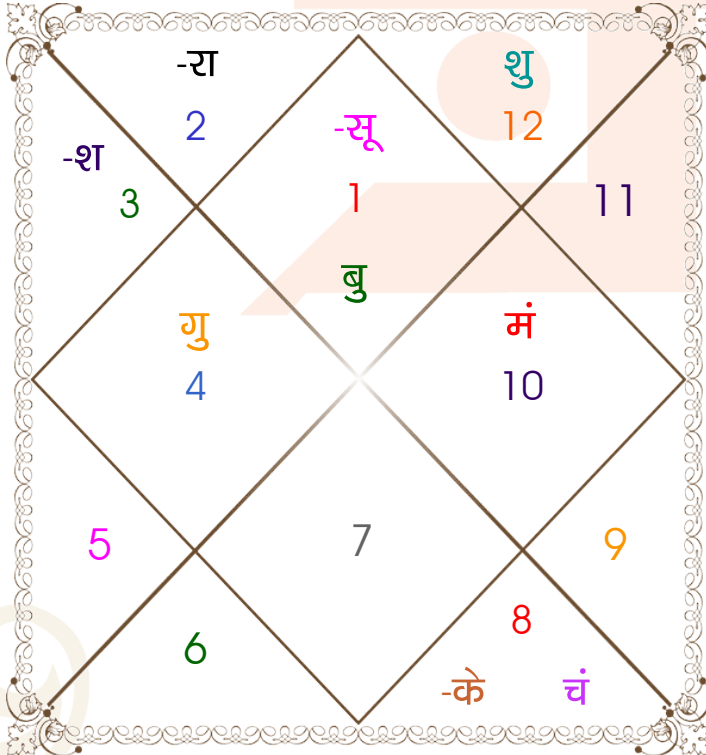
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	24:32:04	420:02:17	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	---
सूर्य			मेष	05:40:52	00:58:35	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	उच्च राशि
चंद्र			वृश्चि	21:22:35	14:33:36	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	नीच राशि
मंगल			मक	04:56:32	00:36:17	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	उच्च राशि
बुध			मेष	24:38:59	00:37:49	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	सम राशि
गुरु			कर्क	14:33:32	00:02:56	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	उच्च राशि
शुक्र			मीन	04:09:34	01:12:27	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	उच्च राशि
शनि			मिथु	01:02:53	00:05:31	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	मित्र राशि
राहु			वृष	05:49:55	00:01:06	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	मित्र राशि
केतु			वृश्चि	05:49:55	00:01:06	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	08:00:03	00:02:12	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	---
नेप			मक	19:06:14	00:00:51	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
प्लूटो	व		वृश्चि	25:50:42	00:00:52	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
दशम भाव			मक	11:03:25	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	चंद्र	--

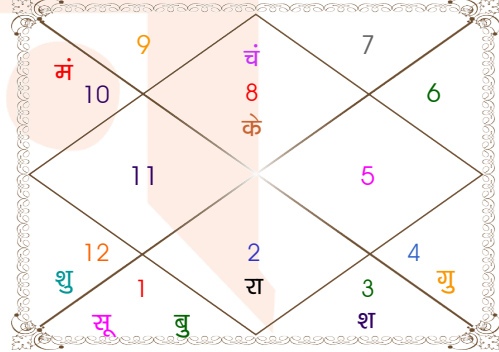
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:55

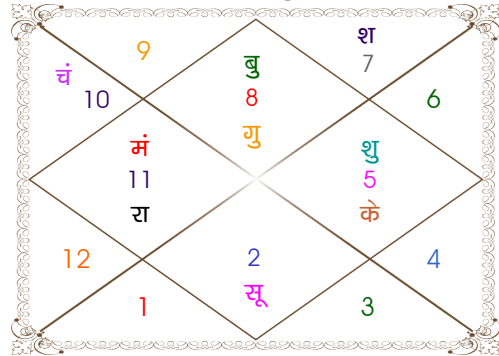
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 07:17:17	मेष 24:32:04
2	वृष 07:17:17	वृष 20:02:31
3	मिथुन 02:47:44	मिथुन 15:32:58
4	मिथुन 28:18:11	कर्क 11:03:25
5	कर्क 28:18:11	सिंह 15:32:58
6	कन्या 02:47:44	कन्या 20:02:31
7	तुला 07:17:17	तुला 24:32:04
8	वृश्चिक 07:17:17	वृश्चिक 20:02:31
9	धनु 02:47:44	धनु 15:32:58
10	धनु 28:18:11	मकर 11:03:25
11	मकर 28:18:11	कुम्भ 15:32:58
12	मीन 02:47:44	मीन 20:02:31

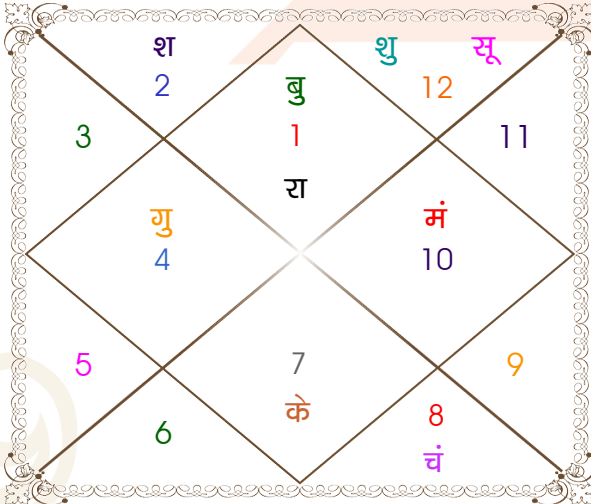
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	24:32:04
2	वृष	22:22:43
3	मिथुन	16:27:10
4	कर्क	11:03:25
5	सिंह	09:50:52
6	कन्या	15:20:23
7	तुला	24:32:04
8	वृश्चिक	22:22:43
9	धनु	16:27:10
10	मकर	11:03:25
11	कुम्भ	09:50:52
12	मीन	15:20:23

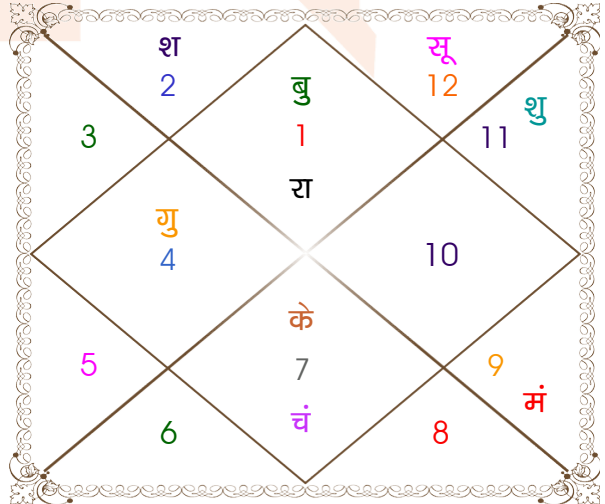
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

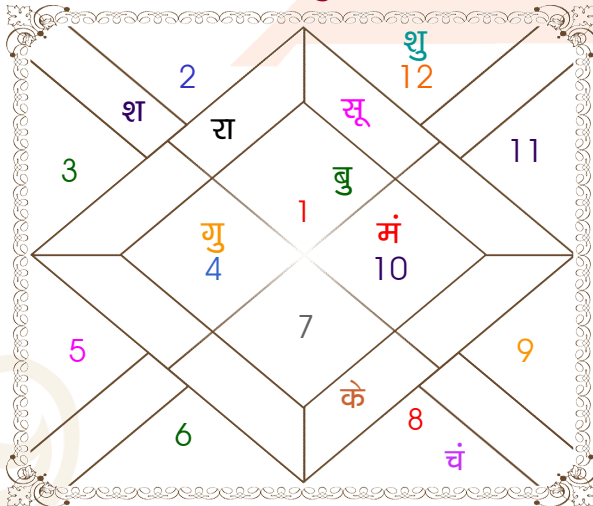
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	मातृ	पितृ	बाल	दीप्त	कौतुक	29.28	39 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	कुमार	भीत	भोजन	1.10	68 %
मंगल	पुत्र	भातृ	मृत	दीप्त	नेत्रपाणि	13.08	40 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	निपीदित	शयन	1.32	92 %
गुरु	भातृ	धन	युवा	दीप्त	गमन	19.88	73 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	दीप्त	भोजन	20.95	75 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	मुदित	आगम	1.52	12 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	भोजन	0.00	11 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	मुदित	नेत्रपाणि	0.00	11 %
कुल						87.14	

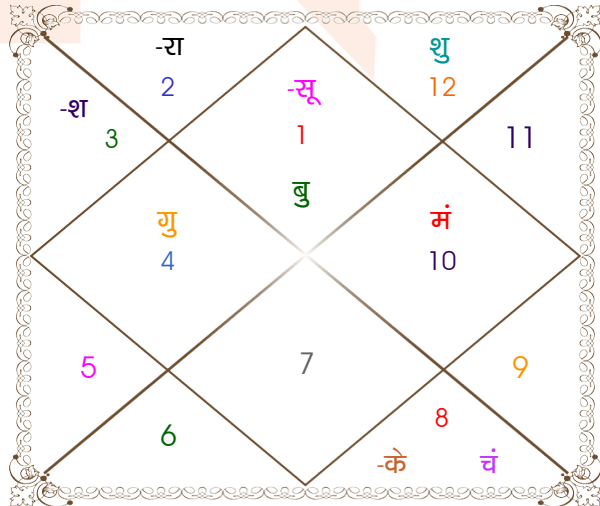
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 11 मास 28 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
20/04/2003	18/04/2014	18/04/2021	18/04/2041	18/04/2047
18/04/2014	18/04/2021	18/04/2041	18/04/2047	18/04/2057
00/00/0000	केतु 14/09/2014	शुक्र 17/08/2024	सूर्य 05/08/2041	चंद्र 16/02/2048
20/04/2003	शुक्र 14/11/2015	सूर्य 17/08/2025	चंद्र 04/02/2042	मंगल 17/09/2048
शुक्र 12/07/2003	सूर्य 21/03/2016	चंद्र 18/04/2027	मंगल 12/06/2042	राहु 18/03/2050
सूर्य 18/05/2004	चंद्र 20/10/2016	मंगल 17/06/2028	राहु 06/05/2043	गुरु 18/07/2051
चंद्र 17/10/2005	मंगल 18/03/2017	राहु 18/06/2031	गुरु 23/02/2044	शनि 16/02/2053
मंगल 14/10/2006	राहु 06/04/2018	गुरु 16/02/2034	शनि 04/02/2045	बुध 18/07/2054
राहु 03/05/2009	गुरु 13/03/2019	शनि 18/04/2037	बुध 11/12/2045	केतु 16/02/2055
गुरु 09/08/2011	शनि 20/04/2020	बुध 16/02/2040	केतु 18/04/2046	शुक्र 17/10/2056
शनि 18/04/2014	बुध 18/04/2021	केतु 18/04/2041	शुक्र 18/04/2047	सूर्य 18/04/2057

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
18/04/2057	17/04/2064	18/04/2082	18/04/2098	19/04/2117
17/04/2064	18/04/2082	18/04/2098	19/04/2117	00/00/0000
मंगल 14/09/2057	राहु 29/12/2066	गुरु 05/06/2084	शनि 22/04/2101	बुध 15/09/2119
राहु 02/10/2058	गुरु 24/05/2069	शनि 17/12/2086	बुध 31/12/2103	केतु 11/09/2120
गुरु 08/09/2059	शनि 30/03/2072	बुध 24/03/2089	केतु 08/02/2105	शुक्र 21/04/2123
शनि 17/10/2060	बुध 17/10/2074	केतु 28/02/2090	शुक्र 09/04/2108	00/00/0000
बुध 14/10/2061	केतु 05/11/2075	शुक्र 29/10/2092	सूर्य 22/03/2109	00/00/0000
केतु 12/03/2062	शुक्र 05/11/2078	सूर्य 17/08/2093	चंद्र 21/10/2110	00/00/0000
शुक्र 12/05/2063	सूर्य 29/09/2079	चंद्र 17/12/2094	मंगल 30/11/2111	00/00/0000
सूर्य 17/09/2063	चंद्र 30/03/2081	मंगल 23/11/2095	राहु 06/10/2114	00/00/0000
चंद्र 17/04/2064	मंगल 18/04/2082	राहु 18/04/2098	गुरु 19/04/2117	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 11 वर्ष 0 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि
17/08/2025	18/04/2027	17/06/2028	18/06/2031	16/02/2034
18/04/2027	17/06/2028	18/06/2031	16/02/2034	18/04/2037
चंद्र 07/10/2025	मंगल 13/05/2027	राहु 29/11/2028	गुरु 26/10/2031	शनि 18/08/2034
मंगल 12/11/2025	राहु 16/07/2027	गुरु 24/04/2029	शनि 28/03/2032	बुध 29/01/2035
राहु 11/02/2026	गुरु 11/09/2027	शनि 14/10/2029	बुध 13/08/2032	केतु 06/04/2035
गुरु 03/05/2026	शनि 17/11/2027	बुध 18/03/2030	केतु 09/10/2032	शुक्र 16/10/2035
शनि 07/08/2026	बुध 16/01/2028	केतु 21/05/2030	शुक्र 20/03/2033	सूर्य 13/12/2035
बुध 02/11/2026	केतु 10/02/2028	शुक्र 20/11/2030	सूर्य 08/05/2033	चंद्र 18/03/2036
केतु 07/12/2026	शुक्र 21/04/2028	सूर्य 14/01/2031	चंद्र 28/07/2033	मंगल 25/05/2036
शुक्र 19/03/2027	सूर्य 13/05/2028	चंद्र 15/04/2031	मंगल 23/09/2033	राहु 14/11/2036
सूर्य 18/04/2027	चंद्र 17/06/2028	मंगल 18/06/2031	राहु 16/02/2034	गुरु 18/04/2037

शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल
18/04/2037	16/02/2040	18/04/2041	05/08/2041	04/02/2042
16/02/2040	18/04/2041	05/08/2041	04/02/2042	12/06/2042
बुध 11/09/2037	केतु 12/03/2040	सूर्य 23/04/2041	चंद्र 20/08/2041	मंगल 11/02/2042
केतु 11/11/2037	शुक्र 22/05/2040	चंद्र 02/05/2041	मंगल 31/08/2041	राहु 02/03/2042
शुक्र 02/05/2038	सूर्य 13/06/2040	मंगल 09/05/2041	राहु 27/09/2041	गुरु 19/03/2042
सूर्य 23/06/2038	चंद्र 18/07/2040	राहु 25/05/2041	गुरु 22/10/2041	शनि 09/04/2042
चंद्र 17/09/2038	मंगल 12/08/2040	गुरु 09/06/2041	शनि 20/11/2041	बुध 27/04/2042
मंगल 16/11/2038	राहु 15/10/2040	शनि 26/06/2041	बुध 16/12/2041	केतु 04/05/2042
राहु 21/04/2039	गुरु 11/12/2040	बुध 11/07/2041	केतु 26/12/2041	शुक्र 26/05/2042
गुरु 06/09/2039	शनि 16/02/2041	केतु 18/07/2041	शुक्र 26/01/2042	सूर्य 01/06/2042
शनि 16/02/2040	बुध 18/04/2041	शुक्र 05/08/2041	सूर्य 04/02/2042	चंद्र 12/06/2042

सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु
12/06/2042	06/05/2043	23/02/2044	04/02/2045	11/12/2045
06/05/2043	23/02/2044	04/02/2045	11/12/2045	18/04/2046
राहु 31/07/2042	गुरु 14/06/2043	शनि 17/04/2044	बुध 19/03/2045	केतु 18/12/2045
गुरु 13/09/2042	शनि 31/07/2043	बुध 06/06/2044	केतु 07/04/2045	शुक्र 09/01/2046
शनि 04/11/2042	बुध 10/09/2043	केतु 26/06/2044	शुक्र 28/05/2045	सूर्य 15/01/2046
बुध 20/12/2042	केतु 27/09/2043	शुक्र 23/08/2044	सूर्य 13/06/2045	चंद्र 26/01/2046
केतु 09/01/2043	शुक्र 15/11/2043	सूर्य 09/09/2044	चंद्र 09/07/2045	मंगल 02/02/2046
शुक्र 04/03/2043	सूर्य 29/11/2043	चंद्र 08/10/2044	मंगल 27/07/2045	राहु 21/02/2046
सूर्य 21/03/2043	चंद्र 24/12/2043	मंगल 28/10/2044	राहु 11/09/2045	गुरु 10/03/2046
चंद्र 17/04/2043	मंगल 10/01/2044	राहु 19/12/2044	गुरु 23/10/2045	शनि 31/03/2046
मंगल 06/05/2043	राहु 23/02/2044	गुरु 04/02/2045	शनि 11/12/2045	बुध 18/04/2046

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र 18/04/2046 18/04/2047	चंद्र - चंद्र 18/04/2047 16/02/2048	चंद्र - मंगल 16/02/2048 17/09/2048	चंद्र - राहु 17/09/2048 18/03/2050	चंद्र - गुरु 18/03/2050 18/07/2051
शुक्र 18/06/2046 सूर्य 06/07/2046 चंद्र 05/08/2046 मंगल 27/08/2046 राहु 20/10/2046 गुरु 08/12/2046 शनि 04/02/2047 बुध 28/03/2047 केतु 18/04/2047	चंद्र 13/05/2047 मंगल 31/05/2047 राहु 16/07/2047 गुरु 25/08/2047 शनि 13/10/2047 बुध 25/11/2047 केतु 12/12/2047 शुक्र 01/02/2048 सूर्य 16/02/2048	मंगल 29/02/2048 राहु 01/04/2048 गुरु 29/04/2048 शनि 02/06/2048 बुध 02/07/2048 केतु 15/07/2048 शुक्र 19/08/2048 सूर्य 30/08/2048 चंद्र 17/09/2048	राहु 08/12/2048 गुरु 19/02/2049 शनि 16/05/2049 बुध 02/08/2049 केतु 03/09/2049 शुक्र 03/12/2049 सूर्य 31/12/2049 चंद्र 14/02/2050 मंगल 18/03/2050	गुरु 22/05/2050 शनि 07/08/2050 बुध 15/10/2050 केतु 13/11/2050 शुक्र 02/02/2051 सूर्य 26/02/2051 चंद्र 08/04/2051 मंगल 06/05/2051 राहु 18/07/2051
चंद्र - शनि 18/07/2051 16/02/2053	चंद्र - बुध 16/02/2053 18/07/2054	चंद्र - केतु 18/07/2054 16/02/2055	चंद्र - शुक्र 16/02/2055 17/10/2056	चंद्र - सूर्य 17/10/2056 18/04/2057
शनि 18/10/2051 बुध 08/01/2052 केतु 11/02/2052 शुक्र 17/05/2052 सूर्य 15/06/2052 चंद्र 02/08/2052 मंगल 05/09/2052 राहु 01/12/2052 गुरु 16/02/2053	बुध 30/04/2053 केतु 30/05/2053 शुक्र 24/08/2053 सूर्य 19/09/2053 चंद्र 01/11/2053 मंगल 02/12/2053 राहु 17/02/2054 गुरु 27/04/2054 शनि 18/07/2054	केतु 31/07/2054 शुक्र 04/09/2054 सूर्य 15/09/2054 चंद्र 02/10/2054 मंगल 15/10/2054 राहु 16/11/2054 गुरु 14/12/2054 शनि 17/01/2055 बुध 16/02/2055	शुक्र 29/05/2055 सूर्य 28/06/2055 चंद्र 18/08/2055 मंगल 22/09/2055 राहु 23/12/2055 गुरु 13/03/2056 शनि 17/06/2056 बुध 11/09/2056 केतु 17/10/2056	सूर्य 26/10/2056 चंद्र 10/11/2056 मंगल 21/11/2056 राहु 18/12/2056 गुरु 12/01/2057 शनि 10/02/2057 बुध 07/03/2057 केतु 18/03/2057 शुक्र 18/04/2057
मंगल - मंगल 18/04/2057 14/09/2057	मंगल - राहु 14/09/2057 02/10/2058	मंगल - गुरु 02/10/2058 08/09/2059	मंगल - शनि 08/09/2059 17/10/2060	मंगल - बुध 17/10/2060 14/10/2061
मंगल 26/04/2057 राहु 19/05/2057 गुरु 08/06/2057 शनि 01/07/2057 बुध 22/07/2057 केतु 31/07/2057 शुक्र 25/08/2057 सूर्य 01/09/2057 चंद्र 14/09/2057	राहु 10/11/2057 गुरु 31/12/2057 शनि 02/03/2058 बुध 25/04/2058 केतु 18/05/2058 शुक्र 21/07/2058 सूर्य 09/08/2058 चंद्र 10/09/2058 मंगल 02/10/2058	गुरु 17/11/2058 शनि 10/01/2059 बुध 27/02/2059 केतु 19/03/2059 शुक्र 15/05/2059 सूर्य 01/06/2059 चंद्र 29/06/2059 मंगल 19/07/2059 राहु 08/09/2059	शनि 11/11/2059 बुध 08/01/2060 केतु 31/01/2060 शुक्र 08/04/2060 सूर्य 28/04/2060 चंद्र 01/06/2060 मंगल 24/06/2060 राहु 24/08/2060 गुरु 17/10/2060	बुध 07/12/2060 केतु 28/12/2060 शुक्र 27/02/2061 सूर्य 17/03/2061 चंद्र 16/04/2061 मंगल 07/05/2061 राहु 01/07/2061 गुरु 18/08/2061 शनि 14/10/2061

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

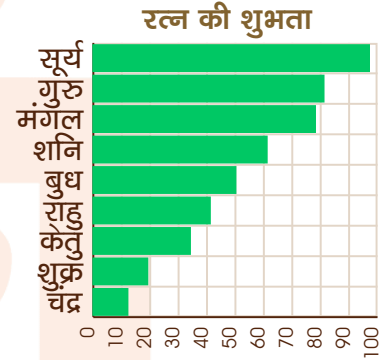
rakeshvyas1988@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	97%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	81%	सुख, भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	78%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
नीलम	शनि	61%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पन्ना	बुध	50%	स्वास्थ्य, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	41%	धन हानि, व्यय
लहसुनिया	केतु	34%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि
हीरा	शुक्र	19%	व्यय, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	12%	दुर्घटना, ग्रह कलेश



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	18/04/2014	100%	0%	78%	62%	81%	31%	61%	41%	34%
केतु	18/04/2021	84%	0%	84%	50%	81%	31%	47%	16%	55%
शुक्र	18/04/2041	84%	0%	78%	56%	81%	44%	67%	52%	47%
सूर्य	18/04/2047	100%	25%	84%	50%	88%	0%	47%	16%	9%
चंद्र	18/04/2057	100%	38%	78%	56%	81%	19%	61%	16%	9%
मंगल	17/04/2064	100%	25%	91%	25%	88%	19%	61%	16%	47%
राहु	18/04/2082	84%	0%	66%	50%	81%	31%	67%	58%	9%
गुरु	18/04/2098	100%	25%	84%	25%	94%	0%	61%	41%	34%
शनि	19/04/2117	84%	0%	66%	56%	81%	31%	73%	52%	9%

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकमी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासनिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।



Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते हैं। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुंडली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहिनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता है। इसका स्वामी जिस भाव में जाता है उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता है। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान है। इस भाव का स्वामी अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता है। और अशुभ फलों में वृद्धि होती है। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह है। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता है। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता है।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि है। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया है। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता है। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते हैं। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यों में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते हैं, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहात करने से बचें। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रुचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 6, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करें। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक पराक्रमी तेजस्वी तथा साहसी होते हैं। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे शीघ्र ही प्रभावित हो जाते हैं। वे जीवन में स्वपरिश्रम विद्वता एवं योग्यता के बल पर उन्नति तथा मान प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं। इसके साथ ही उनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करने में वे समर्थ रहते हैं।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा निर्भय होकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी तथा अपने कौशल एवं बुद्धिमता से इनमें आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी जिससे मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। आप एक स्वाभिमानी महिला होंगी तथा अपने परिश्रम योग्यता एवं विद्वता से उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव विद्यमान होगा परन्तु क्रोध पर नियंत्रण रखने में समर्थ होंगी। अतः इससे आपको कोई विशेष परेशानी या समस्या नहीं होगी। यदा कदा आप चंचलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी लेकिन यह सीमित मात्रा में ही रहेगा। आपको जन्म स्थान से अन्यत्र स्थान में इच्छित उन्नति मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही भौतिक धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों से युक्त होकर आप अपना जीवन सुख पूर्वक व्ययतीत करेंगी।

लग्न में बुध के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी तथा कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। धर्म के प्रति आपकी आस्था रहेगी तथा गणित या आयुर्विज्ञान के प्रति आपके मन में रुचि रहेगी तथा इनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही लेखन क्षेत्र में भी आप सफलता अर्जित कर सकती हैं।

सत्य के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा आपकी विद्वता से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा अतः अत्यंत ही सोच समझकर अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। कलाओं की भी आप मर्मज्ञ होंगी तथा स्वभाव भी गम्भीर न होकर विनोदी रहेगा। आपके वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा सामान्यतया अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही उपयोग करेंगी जिससे समाज में आप एक सम्मानित महिला के रूप में जानी जाएंगी।

इस प्रकार आप एक साहसी विदुषी बुद्धिमान तथा परिश्रमी महिला होंगी तथा अपनी योग्यता एवं कार्यकुशलता से जीवन में इच्छित मान सम्मान सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी तथा आनंद पूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सांसारिक सुखों तथा धन ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इस राशि के प्रभाव से जीवन में आपको किसी निकट संबंधी की धन सम्पत्ति की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी क्योंकि अपने निकट संबंधियों से आपका व्यवहार सद्भावना से परिपूर्ण रहेगा तथा उनकी सुख दुख में पूर्ण सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगी। बागवानी के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा समय समय पर आप इसमें तत्पर रहेगी।

जीवन में आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ समय व्यतीत करेंगी साथ ही समाज में भी एक आदरणीय महिला रहेंगी तथा अन्य लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक भी रहेंगी तथा इस प्रवृत्ति का समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी। मिष्ठान भक्षण के प्रति आप रुचिशील रहेंगी तथा इससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। अन्य जनों से सामान्यतया वार्तालाप में आप अत्यंत ही मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन आदि से भी युक्त रहेंगी तथा बहुमूल्य वस्तुओं तथा रत्नों को अर्जित करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति भी अपनी उच्चराशि में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आप सर्व प्रकार के सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक उनका उपभोग करेंगी। समाज में भी आप गणमान्य महिला मानी जाएंगी तथा आपके उच्चस्तर के कारण अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक परम सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति की स्वामिनी बनेंगी। यह सम्पत्ति आप अपनी बुद्धिमता एवं भाग्यबल से अर्जित करेंगी। अन्य वैभव एवं ऐश्वर्य से भी आप युक्त होंगी तथा आपके उच्चस्तर से सभी लोग प्रभावित होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली एवं आदरणीय महिला मानी जाएंगी तथा समृद्धि एवं धनाढ्यता से सभी लोग आपके सान्निध्य को अधिक प्राप्त करने के उत्सुक होंगे फलतः सामाजिक मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप एक उत्तम एवं आराम दायक बड़े घर की स्वामिनी होंगी तथा सर्व प्रकार से यह सुसज्जित रहेगा। यह किसी प्रसिद्ध क्षेत्र में स्थित होगा तथा क्षेत्रफल भी अधिक होगा। इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण को आप बनाये रखेंगी एवं भौतिक एवं इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरणों से घर सुसज्जित होगा। इसके अतिरिक्त आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा। आपको उत्तम वाहन सुख भी प्राप्त होगा तथा इनकी संख्या एक से अधिक होगी।

आपकी माता कुलीन घर की शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होगी तथा परिवार में सभी लोग उनका सम्मान करेंगे। वह भी सबका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से सबको बराबर स्नेह देगी परंतु आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर आपको नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य उन्हीं के सहयोग से सम्पन्न होंगे। आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं अपनत्व का भाव होगा तथा अपनी ओर से उन्हें हमेशा सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने में तत्पर होंगी।

आप बचपन से ही अध्ययन के प्रति रुचिशील होंगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही अध्ययन में अच्छी उन्नति का प्रदर्शन करेंगी। स्नातक परीक्षाओं में आप अच्छे अंको से उतीर्ण होंगी जिसका मुख्य कारण आपकी बुद्धिमता योग्यता एवं लगनशीलता होगी। इससे आप में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा तथा निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगी ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगी। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रुचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रुचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगी क्यों कि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी महिला हैं। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगी।

सिंह राशि की स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगी। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोनों को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगी। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगी तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनो, समीपस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगी तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल भ्रमण प्रिय प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरु जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपके पति का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगे। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में वह दक्ष होंगे एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रुचि रहेगी तथा यदा कदा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपके पति लालिमा लिए गौर वर्ण के पुरुष होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य एवं व्यक्तित्व में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह उचित समय पर होगा तथा इसमें कोई अनावश्यक परेशानी नहीं होगी। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को एक दूसरे की सहमति से पूरा करेंगे। इससे आपस में विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे। विवाह के समय ससुराल से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज तथा उपहारों की प्राप्ति होगी जिससे आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही साले एवं सालियों से भी सौम्य स्वभाव के कारण उनके मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही अपनी उच्चराशि में स्थित मंगल भी दशमभाव में ही बैठा है। मकर राशि भूमि तत्व तथा मंगल अग्नितत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र श्रम साध्य होगा परन्तु बुद्धि एवं मानसिक क्रिया का भी उसमें समावेश होगा। मंगल की उच्चस्थ स्थिति के प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आप निरन्तर उन्नतिशील रहेंगी तथा वांछित उन्नति लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अग्नितत्व मंगल एवं चर राशि मकर के प्रभाव से आप किसी स्वतंत्र व्यवसाय को भी सम्पन्न कर सकती हैं।

आजीविका की दृष्टि के आपके लिए पुलिस, सी आई डी, जेल, इंजीनियरिंग, चिकित्सा क्षेत्र, सर्जन, होटल-प्रबन्धन, धातु कार्य, शस्त्र निर्माण, विद्युत या शाक्ति विभाग तथा सेना में कार्य करना शुभ एवं लाभप्रद रहेगा। यदि आप इन क्षेत्रों में अपनी आजीविका प्रारम्भ करेंगी तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा विशिष्ट उपलब्धियां भी मिलेंगी। साथ ही सभी लोग आपके कार्य कलापों से प्रभावित होंगे।

व्यापारिक क्षेत्र के लिए आप शस्त्रों का व्यापार, सोने का कार्य, लोहा या अन्य धातु के कार्य, विद्युत उपकरणों का उत्पादन, औषधि का विक्रय, रासायनिक वस्तु या किसी भारी उद्योग से इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। यदि आप अपने व्यवसाय में उपरोक्त कार्यों को सम्पन्न करेंगी तो इनमें आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा शीघ्र ही आप आर्थिक रूप से सुदृढ़ होंगी एवं उन्नति के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगी। साथ ही आपके कार्य की उन्नति को देखकर अन्य लोग भी आपके अनुकरण के लिए प्रेरित होंगे।

आपकी जन्म कुंडली में लग्नेश की दशम भाव में उच्च स्थिति के प्रभाव से आप जीवन में अनुकूल समय पर उचित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ होंगी। साथ ही कार्य एवं सामाजिक क्षेत्र में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। अतः आप किसी उच्च पद को अवश्य प्राप्त करेंगी। साथ ही अवैतनिक उच्च पद पर भी आप आसीन हो सकती हैं जो आपकी प्रतिष्ठा की वृद्धि का सूचक होगा। अतः आप तत्परता से अपने कार्य क्षेत्र में संलग्न रहें।

आपके पिता एक पराक्रमी बुद्धिमान योग्य एवं तेजस्वी प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा समाज एवं परिवार में उनका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। साथ ही सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। उनकी प्रवृत्ति परोपकार की होगी तथा कई सामाजिक संस्थाओं के प्रति उनका योगदान रहेगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना होगी तथा वाल्यकाल से ही आपकी उन्नति के लिए वे विशिष्ट व्यय एवं संसाधनों को प्राप्त करके आपका उन्नतिमार्ग प्रशस्त करेंगे। आप की भी उनके प्रति मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा भयमिश्रित सम्मान भी विद्यमान होगा। साथ ही उनकी आज्ञापालन में भी तत्पर होंगी। इस प्रकार पिता से आपको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह मिलता रहेगा तथा उनके प्रभाव से आप प्रसिद्धि भी प्राप्त करेंगी एवं जीवन में सफलता अर्जित

करेंगी ।



Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान के शनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक ब्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। आपको मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होना शुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथलम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठ में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

Gayatri jyotish karyalaya

Sojat Road, Rajasthan 306103, India

9799364202, 9929276521

rakeshvyas1988@gmail.com

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधिओं को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राएं होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत ज्यादा विश्वास न करें। अपने आत्मविश्वास को बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चण्डाल योग बन रहे हैं।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर पैसा खर्च हो सकता है। नई संपत्ति क्रय-विक्रय करने के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का

स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे आपकी दूसरी सन्तान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात् ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहते हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

